Knowledgeable Research (KR)
ISSN: 2583-6633 | CODEN: KRABAU
International Open-Access Peer-Reviewed Refereed Multidisciplinary Journal
https://knowledgeableresearch.com
Vol. 5, Issue 04, April, 2026

Received: 11/03/2026 | Accepted: 22/04/2026 | Published: 30/04/2026

भारतीय स्मृति-साहित्य में पर्यावरण संरक्षण: अवधारणा और समकालीन प्रासंगिकता

Dr. Richa Mukta*
Associate Professor, A. P. Sen Memorial Girls P.G. College, Charbagh, Lucknow

शोध सार-

पर्यावरण शब्द दुनिया में व्यापक रूप से प्रचलित है। पर्यावरण पर जीव निर्भर है, पर्यावरण वह है जिससे जीव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। पर्यावरण के तत्वों में वृक्ष, जल, वायु, समाज, पर्वत और जीव-जंतु शामिल हैं। वास्तव में, प्रकृति, पर्यावरण, भोजन, वस्त्र और अन्य वस्तुएँ मनुष्य के लिए आवश्यक हैं। पर्यावरण को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। हालांकि, अब विश्व भर में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सभी पर्यावरण विशेषज्ञों, विचारकों, वैज्ञानिकों और अन्य लोगों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन भयावह रूप लेती जा रही है। हालांकि इस समस्या के कई कारण हैं जैसे जनसंख्या वृद्धि, स्वच्छता सुविधाओं की कमी, गरीबी आदि, वर्तमान में वनों की कटाई पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण प्रतीत होती है। इस समस्या को देखते हुए, विश्व भर के पर्यावरणविद पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। इस विषय के विद्वान विभिन्न कार्यशालाओं में इस पर चर्चा कर रहे हैं। सरकार भी पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान दे रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से विभिन्न निर्माण क्षेत्रों में इस मंत्रालय की स्वीकृति आवश्यक है। यह विचारणीय है कि पर्यावरण विषय पर हमारे संस्कृत साहित्य में किस प्रकार का विश्लेषण उपलब्ध है।

कूट शब्द: *पर्यावरण, वृक्ष संरक्षण ,जलवायु संरक्षण ,जीव संरक्षण*

***Corresponding Author:**
Dr. Richa Mukta
Email: richa.mukta@gmail.com

संस्कृत साहित्य में जो कुछ भी दर्शाया गया है, वह सभी प्राणियों के सांसारिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए है। ऋषि और महर्षि भी पर्यावरण के ज्ञाता थे। यही कारण है कि संस्कृत साहित्य में पर्यावरण के तत्वों का विस्तृत वर्णन मिलता है। भगवद्गीता में कहा गया है कि इसका उद्देश्य शुद्ध पर्यावरण की कामना करना है-

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।[1]

पर्यावरण के तत्वों की शांति की कामना का एकमात्र उद्देश्य पर्यावरण का शुद्धिकरण करना है, क्योंकि प्राकृतिक तत्वों में विकृति आने पर जानवरों में भी विकृति आ जाती है। शुद्ध तत्वों और जीवों में भी शुद्धता और स्वास्थ्य की कामना की जाती है।

हमारे संस्कृत साहित्य के अग्रदूत पर्यावरणविद थे। क्योंकि हमारा देश, भारत, मुख्य रूप से आध्यात्मिक था, इसलिए उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के लिए धार्मिक दृष्टिकोण से उपाय सुझाए। इस प्रकार, धर्म की जीवनधारा, भारतीय संस्कृति, धर्मशास्त्रियों और ऋषियों द्वारा रचित स्मृति साहित्य में प्रतिबिंबित हुई। धर्मशास्त्र के

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

नियमों का पालन न केवल मानव समाज बल्कि संपूर्ण विश्व में संतुलन लाता है। स्मृति साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के अनेक विषय वर्णित हैं, जो पर्यावरण संरक्षण को संभव बनाते हैं। यहाँ हम इस बात पर विचार करेंगे कि हमारे स्मृति साहित्य में पर्यावरण विषय पर किस प्रकार का विश्लेषण मिलता है। यहाँ, सर्वप्रथम, वृक्ष संरक्षण पर विचार किया जाएगा।

पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षों का संरक्षण आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि और अन्य कारणों से प्रतिदिन वृक्षों की कटाई हो रही है। वृक्षों की कटाई की इस प्रवृत्ति को देखते हुए ही सरकार ने वन अधिनियम बनाया, जो प्राचीन काल से ही पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रचलित था। संस्कृत साहित्य और वेदों में भी वृक्षों का विशेष उल्लेख मिलता है।

वृक्षों के महत्व को देखते हुए, उनके महत्व को बताने से पहले वृक्षारोपण विधि का विश्लेषण भी आवश्यक है। स्मृति साहित्य में वर्णन है कि वृक्षारोपण पापों के नाश और अन्य मोक्षों की प्राप्ति का कारण बनता है। वृक्षारोपण पर्यावरण की रक्षा करता है। मनुस्मृति में भी यही उल्लेख है।

सीमावृक्षांश्च कुर्वीत न्यग्रोधाश्वत्थकिंशुकान्।

शाल्मलीन्सालतालांश्च क्षीरिणश्चैव पादपान्।।

गुल्मान्वेणूंश्च विविधान्शमीवल्लीस्थलानि च।

शरान्कुब्जकगुल्मांश्च तथा सीमा न नश्यति ।।[2]

अर्थात्, पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए, गाँव की सीमाओं को न्याग्रोध, अश्वत्था, किंशुका से ढका जाता है।

सालमाली, साल्टा और झाड़ियों जैसे वृक्षों का रोपण आवश्यक है। वृक्ष संरक्षण का वर्णन स्मृति साहित्य में लगभग हर जगह मिलता है। इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति वृक्ष काटता है, तो उसके लिए दंड का भी प्रावधान है। जैसा कि याज्ञवल्क्य स्मृति के आचरण संबंधी अध्याय में पाया गया है:-

प्ररोहिशाखिनां शाखास्कन्धसर्वविदारणे।

उपजीव्यद्रुमाणां च विंशतेर्द्विगुणो दमः॥[3]

चैत्यश्मशानसीमासु पुण्यस्थाने सुरालये।

जातद्रुमाणां द्विगुणो दमो वृक्षे च विश्रुते ।।[4]'

अर्थात, मंदिरों, श्मशानों और पूजा स्थलों में उगे पेड़ों की शाखाएँ काटने पर ऊपर बताया गए दंड से दुगुना दंड मिलता है। अंजीर, कमल आदि काटने पर दुगुना दंड मिलता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि अंजीर और कमल पर्यावरण के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, अंजीर के पेड़ पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऋग्वेद में भी अश्वत्था का उल्लेख इस प्रकार है:

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।[5]

तथा स्कन्दपुराण में भी प्राप्त होता है -

अश्वत्थं रोपयेद्यस्तु पृथिव्यां प्रयतो नरः।

तस्य पापसहस्राणि विलयं यान्ति तत्क्षणात्।।[6]

याज्ञवल्क्यस्मृति में वर्णन है -

गुल्मगुच्छक्षुपलताप्रतानौषधिवीरूधाम्।

पूर्वस्मृतादर्धदण्डः स्थानेषूक्तेषु कर्तने।'[7]

अर्थात्, चमेली, अवल्ली, करावीर, अंगूर, सरिवा, चावल आदि जैसे वृक्षों को काटने पर ऊपर उल्लिखित दंड का आधा दंड दिया जाता है। इसी प्रकार, वृक्ष संरक्षण का विवरण भी संक्षिप्त स्मृति में पाया जा सकता है:-

सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च यशस्विनः।[8]

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

अर्थात्, सभी कांटेदार वृक्ष पवित्र होते हैं और सभी दूध देने वाले वृक्ष गौरवशाली होते हैं। इसलिए, उन्हें काटना उचित नहीं है।

रेखांकित किया गया बल्कि लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित भी किया गया। केवल स्वस्थ वृक्ष ही पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम हैं। इसी कारण स्मृतियों में वृक्षों की रक्षा के लिए वृक्षायुर्वेद का वर्णन मिलता है। हमें वृक्षारोपण के अनेक वर्णन न केवल स्मृति ग्रंथों में बल्कि अन्य ग्रंथों में भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए, अग्नि पुराण के बयासीवें और बाईसवें अध्यायों में, तेरह श्लोकों में और बृहत् संहिता के पचपनवें अध्याय में वृक्षायुर्वेद का विस्तृत वर्णन है। यहाँ अरिष्ट, अशोक, पुत्रग, शिरिष आदि वृक्षों को रोपने योग्य बताया गया है। वृक्षारोपण विधि का भी इस प्रकार वर्णन किया गया है:-

उत्तमं विशतिर्हस्ता मध्यमं षोडशान्तरम्।

स्थानात् स्थानान्तरं कार्य वृक्षाणां द्वादशावरम्।।'[9]

यहां स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पेड़ खराब हो जाते हैं। पौधों के सिंचाई भी आवश्यक बताई गई है। उदाहरण के लिए:-

सायं प्रातस्तु घर्मान्ते शीतकाले दिनान्तरे।

वर्षा रात्रौ भुवः शोषे सेक्तव्या रोपिता वृक्षा।।[10]

इस प्रकार,वृक्षों की सिंचाई भी समय- समय के अनुसार निर्धारित की जाती है, और वृक्षों के उपचार का तरीका भी यहाँ मिलता है, जिसमें विकृति उत्पन्न होने पर वृक्षों के विकृत भाग को औजार से ठीक करना और औषधीय पदार्थों का छिड़काव करना शामिल है।

पुराणों में फलों के नष्ट होने पर वृक्षों की जड़ों में कुलत्था, मांस, शहद, जौ, तिल और घी मिले जल से सींचने का विधान है। बृहत् संहिता के आरंभ में **'चिकित्सात-मथैतेषम'** नामक यंत्र से शुद्धि का उल्लेख है। वृक्षों का संरक्षण पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि लगभग सभी स्मृतियों में वृक्षों को काटने का निषेध मिलता है। वृक्ष पर्यावरण की वायु को शुद्ध करते हैं। वायु प्रदूषण को दूर करते हैं। इसलिए, वृक्षारोपण और वृक्ष संरक्षण पर्यावरण के लिए आवश्यक है। मत्स्य पुराण में निम्नलिखित कथन से वृक्षों का महत्व स्पष्ट होता है:-

दसकूपसमावापी दसवापीसमो ह्रदः।

दसह्रदसमः पुत्रो दसपुत्रसमो द्रुमः ।।'[11]

इसी प्रकार ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी एक स्थल द्रष्टव्य है -

पुत्रैर्विना शुभफलं न भवेन्नराणां।

दुष्पुत्रकैरपि तथोभयलोकनाथः॥

एतद्विचार्यसुधिया परिपाल्यवृक्षान्।

यत्नेन वेदविधिना परिकल्पनीया ।।'[12]

इस प्रकार ज्ञात होता है कि संस्कृत विद्वानों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों का विस्तृत विश्लेषण किया है। अतः, इन ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण के अनेक उपाय समाहित हैं। इससे स्पष्ट है कि स्मृति विज्ञान के प्रवर्तकों ने लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया है।

पर्यावरण तत्वों में जलकार्बनों का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यावरण संरक्षण के लिए इन दोनों का शुद्धिकरण आवश्यक है। क्योंकि जल और वायु को पंचमस्तिष्कों में अद्वितीय स्थान प्राप्त है। उदाहरण के लिए, मनुस्मृति में जल की उत्पत्ति को ही मुख्य विषय बताया गया है:-

सोऽभिध्यायशरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः।

अप एवससर्जादौ ताषु वीर्यमवासृजत्।।'[13]

शङ्खस्मृति में भी उपलब्ध होता है -

पृथिव्यापस्तथा तेजोवायुराकाशमेव च।

पञ्चेमानि विजानीयान्महाभूतानि पण्डितः ।।[14]

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सृष्टि के सुचारू संचालन के लिए इन दोनों का शुद्धिकरण आवश्यक है, लेकिन वर्तमान भौतिक युग में चीनी कारखानों और शहरों का दूषित जल, मल-मूत्र आदि गंगा और अन्य नदियों में डाला जाता है, जिससे उनका जल प्रदूषित हो जाता है। यही जल प्रदूषण का मुख्य कारण है। अब तो पूजनीय गंगा और अन्य नदियों में स्नान करने से भी जुगुप्सा उत्पन्न हो जाती है। सरकार भी गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयास कर रही है, लेकिन यह समस्या पर्यावरणविदों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। स्मृति-वनमय में देवताओं का जल और नदियों में निवास स्थान पर्यावरण संरक्षण के लिए बताया गया है। इसी प्रकार, जल के देवता के बारे में शंखस्मृति में भी उल्लेख मिलता है।

प्रपद्येवरुणं देवमम्भसां पतिमूर्जितम्।

याचितं देहि मे तीर्थं सर्वपापापनुत्तये ।।'[15]

रुद्रान् प्रपद्ये वरदान् सर्वानप्सुषदस्तथा।

सर्वानप्सुषदश्चैव प्रपद्ये प्रयतः स्थितः।।'[16]

इसीलिए प्राचीन काल में जल की पूजा की जाती थी। अतः उस समय जल प्रदूषण की समस्या उत्पन्न नहीं हुई। संस्कृत साहित्य में जल को जीवन कहा गया है। जलस्तर ही परम ब्रह्म में नारायण को 'नारायण' नाम देने का कारण है। उदाहरण के लिए,

तेन नारायणोऽप्युक्तो मम तत् त्वयनं सदा।[17]

मनुस्मृति में भी कहा गया है-

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।

ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥[18]

वातावरण को हवा की विशेषताओं के आधार पर नाम दिया गया है। वातावरण में हवा भी शामिल होती है। वर्तमान में, रेलगाड़ियों, मोटर वाहनों और निर्माण स्थलों से निकलने वाले प्रदूषित धुएं से वातावरण पूरी तरह प्रदूषित है। प्रदूषित वातावरण पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण है। वायु के बिना कोई भी जीवित नहीं रह सकता, और प्रदूषित वातावरण में तो जीवित प्राणियों का जीवन ही संकट में प्रतीत होता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों का महत्व सर्वविदित है, लेकिन पर्यावरण की स्वच्छता के लिए वातावरण को शुद्ध करना अत्यंत आवश्यक है।

संस्कृत साहित्य में वातावरण को शुद्ध करने के लिए किए जाने वाले कई विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

श्रीमद् भगवद् गीता का यह कथन, जो त्याग के विषय में है, सर्वत्र स्वीकृत है।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।

यज्ञाद् भवन्ति पर्जन्याः यज्ञकर्मसमुद्भवाः॥[19]

यज्ञों का महत्व इस बात में निहित है कि घी जैसे पोषक तत्वों से उत्पन्न धुआं वातावरण में व्याप्त विषों को नष्ट करके संपूर्ण वातावरण को शुद्ध करता है। जीवन बचाने के लिए श्वास के माध्यम से वातावरण का शुद्धिकरण नहीं करना चाहिए। इसीलिए कात्यायन स्मृति में इसका उल्लेख है।प्राप्यते-

एकाहमपि कर्मस्थो योऽग्निशुश्रूषकः शुचिः।

नयत्यत्र तदेवास्य शताहं दिवि जायते ।।[20]

यस्त्वाधायाग्निमाशास्य देवादीन्नैभिरिष्टवान्।

निराकर्तामरादीनां स विज्ञेयो निराकृति ।।[21]

पर्यावरण की दृष्टि से, जीवित प्राणियों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिए संस्कृत साहित्य में स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। भगवद्गीता में यह उल्लेख है कि:-

'इमारुद्रायतवशेकपर्द्दिन[22]

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

इस मंत्र में सभी जीवों के स्वास्थ्य का उल्लेख है और इसमें यह भी वर्णन मिलता है कि **"शम नो अस्तु द्विपदे शम चतुष्पदे"** यहाँ भी सभी जीवों, चाहे वे दो पैरों पर चलने वाले हों या चार पैरों पर चलने वाले, के कल्याण की कामना की गई है।

पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।

रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायुजा ।।

अण्डजाः पक्षिणः सर्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः।

यानि चैवम्प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च।[23]

'अहिंसा परमो धर्मः"अहिंसा ही सर्वोच्च धर्म है' भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य है। आज भी भारत सरकार का पर्यावरण मंत्रालय जीव-जंतुओं के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। यह कहना निसंदेह गलत नहीं होगा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी प्रकार के जीव-जंतुओं का संरक्षण आवश्यक है।

इस प्रकार यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हमारे स्मृति साहित्य में पर्यावरण विषय एवं पर्यावरण संरक्षण का विस्तृत वर्णन उपलब्ध है पर हमारे ऋषियों और महान विद्वानों के विचारों के प्रकाश में, जन कल्याण अवश्य प्राप्त किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ - सूची

1. यजुर्वेद: 36/17
2. मनुस्मृति 8/246-247
3. याज्ञवल्क्यस्मृतिः 2/227
4. तत्रैव 2/228
5. ऋग्वेदः 10.97.5
6. स्कन्दपुराणम् 6/247/38
7. याज्ञवल्क्यस्मृतिः 3/229
8. लघुहारीतस्मृतिः 4/9
9. बृहत्संहिता 55/12
10. अग्निपुराणम् 282/78
11. सुभाषितरत्नभाण्डागारः 151/114
12. संस्कृतसाहित्य एवं पर्यावरण पृ. 27
13. मनुस्मृतिः 1/8
14. शङ्खस्मृतिः 7/23
15. तत्रैव, 9/3
16. शङ्खस्मृतिः 9/5
17. महाभारते वनपर्वणि 189/3
18.. मनुस्मृतिः 1/10
19.. श्रीमद्भगवद्गीता 3/14
20. कात्यायनस्मृतिः 26/16
21. तत्रैव, 16/17
22. शुक्लयजुर्वेदः
23. मनुस्मृतिः 1/43-44

संदर्भ ग्रंथसूची-

- ऋग्वेदः, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पार्टी, जिला सतारा, 1940।
- दक्षस्मृतिः, नागप्रकाशनम्, जवाहरनगरम्, देहली।
- धर्मशास्त्र का इतिहास, पी. वी. काणे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थानम्, लखनऊ, चतुर्थसंस्करणम्, 1992।
- मनुस्मृतिः, डा. उर्मिला रुस्तगी जे. पी. पर्बिलशिंग हाउस, दिल्ली।
- मनुस्मृतिः, उल्लुकभट्ट, डा. राकेश शास्त्री, विद्यानिधि प्रकाशन खजूरीखास, दिल्ली।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

- मनुस्मृतिः, गणेशदत्त की सुबोधिनी टीका सहित ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स वाराणसी।
- महाभारत, महर्षिवेदव्यासः, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि. सं. 2056।
- मानव और पर्यावरण, हरिचन्द्र एवं कैलाश व्यास विद्याविहार, नई दिल्ली-02, 1993।
- व्यास,मौसम विज्ञान, रमेशचन्द्र वनर्जी, दयाशंकर उपाध्याय, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ए26/2, विद्यालय मार्ग, जयपुर,
- वेदो में विज्ञान, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर, भदोही, (उ.प्र.), 2004।
- वेदो में पर्यावरण संरक्षण, डॉ. नन्दिता सिंघवी, देवनागर प्रकाशन जयपुर, 2005
- शंखस्मृतिः, नागप्रकाशनम्, जवाहरनगरम्, देहली

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)